19

बच्चे और स्कूल

*सुनील कुमार गौड़**

बच्चे स्कूल जाते हैं-
नन्हें बच्चे प्यारे बच्चे,
कुछ उदास, गुमसुम से बच्चे,
कुछ गुस्से में, कुछ रोते बच्चे,
कुछ भाव लिए चेहरे पर...
क्यों?

क्या कुछ ऐसा हो सकता है!
बच्चे स्कूल जाएँ, खुश होकर, ऐसे...
स्कूल में, छुट्टी की घंटी बजने पर जैसे,
खुश होकर, घर आते बच्चे।

क्या ऐसा भी हो सकता है!
स्कूल बन जाएँ 'आनन्दालय'
और शिक्षक बन जाएँ बच्चों के माली,
कैसे माली?

ऐसे माली,
जो फुलवारी सींच सकें,
'सृजन' के खाद और पानी से,
और बच्चे स्कूल जाएँ, ऐसे,
जैसे, खुश होते मुस्काते बच्चे,
छुट्टी की घंटी बजने पर,
खुश होकर, घर आते बच्चे।

* *शिक्षक-प्रशिक्षक,* पाठ्यचर्या विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., उत्तराखंड

कुछ अन्य एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन

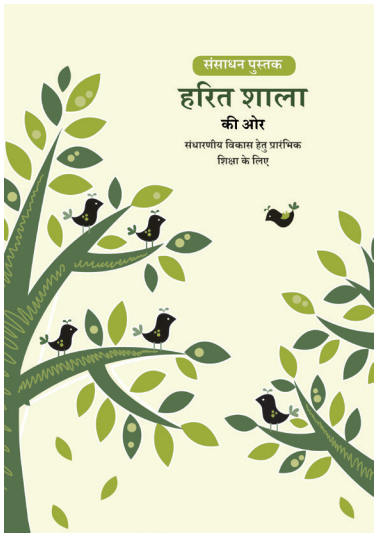

₹ 115.00 / pp 166

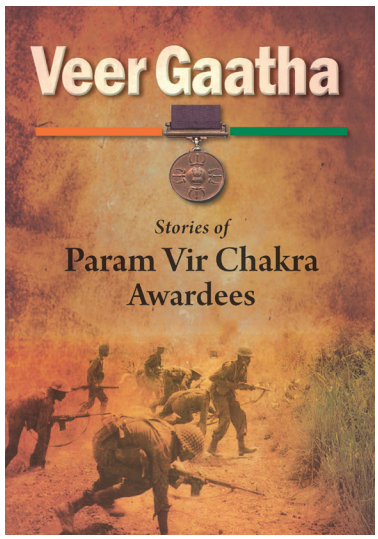

₹ 100.00 / pp 128

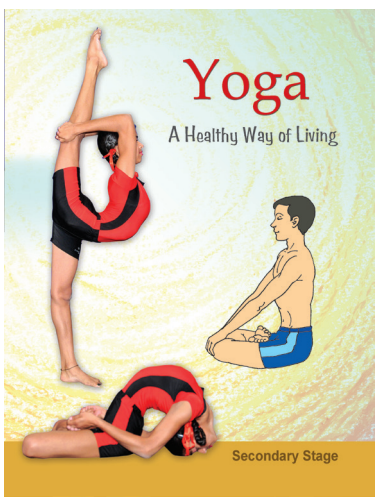

₹ 50.00 / pp 80

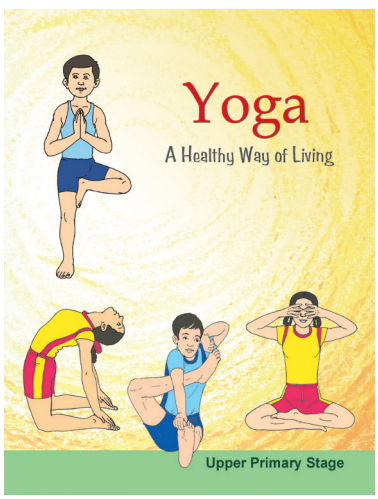

₹ 50.00 / pp 100

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।